शोध मंथन Vol. XVII No.2 Apr.- June. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.039

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्मक मानववाद और आधुनिक भारत में उसकी प्रासंगिकता

प्राप्तिः 31.05.2026
स्वीकृतः 17.06.2026

39

टिंकी चौधरी
पीएचडी शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उ0प्र0
ईमेलः *tinkychoudhary66@gmail.com*

प्रो0 (डॉ) प्रतीत कुमार
राजकीय महाविद्यालय
छपरौली (बागपत)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ, उ0प्र0

सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिया गया एकात्म मानववाद की अवधारणा का आधुनिक भारत में विश्लेषण किया गया है। एकात्म मानववाद भारतीय चिंतन पर आधारित एक ऐसी समग्र विचारधारा है। जो मानव जीवन के भौतिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक आयाम के संतुलित विकास पर बल देती है। यह विचारधारा पूंजीवाद और समाजवाद जैसी पाश्चात्य अवधारणाओं से भिन्न एक स्वदेशी विकास मॉडल प्रस्तुत करते है। जिसमें व्यक्ति समाज और राष्ट्र के बीच समन्वय को केंद्रीय स्थान दिया गया है प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत आधुनिक भारत के समय में आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। तब एकात्म मान्यवर की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

मुख्य शब्द

एकात्म मानववाद, पूंजीवाद, समाजवाद, आधुनिक भारत, आध्यात्मिक आयाम, सांस्कृतिक परिवर्तन, स्वदेशी

परिचय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय 1916 से 1968 भारत के प्रमुख दार्शनिक, चिंतक, अर्थनीतिज्ञ एवं भारतीय जनसंघ के प्रमुख वैचारिक मार्गदर्शन थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति और दर्शन के आध ार पर एक मौलिक राजनीतिक सामाजिक दर्शन प्रस्तुत किया, जिसे एकात्म मानव (Integral Humanism) कहा जाता है।

एकात्म मानववाद की अवधारणा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा सन 1965 में प्रतिपादित एकात्मानवा दर्शन, मानव जीवन, समाज और विकास को समझने के लिए एक स्वदेशी भारतीय संरचना प्रस्तुत करते हैं, यह पश्चिमी वैचारिक धारणओ, विशेषकर पूंजीवाद और समाजवाद की सीमाओं का प्रतिपादन के संदर्भ में भारत के सामाजिक सांस्कृतिक वास्तविकताओं का दार्शनिक उत्तर प्रस्तुत करता है। एकात्म मानव दर्शन

एक समग्र और मूल्य – उन्मुक्त दृष्टिकोण स्थापित करना चाहता है। जो भौतिक प्रगति को नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक कल्याण के साथ एकीकृत करता है, इस दर्शन के मूल तत्व की यह मानता है कि मानव विकास में चार आयाम शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा में समग्रता निहित है ,प्रत्येक आयाम के महत्व के अनुसार शरीर शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, मन भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक पहलुओं से संबंधित है, बुद्धि तर्कसंगत मनोविचार एवं नैतिक निर्णय लेने पर केन्द्रित है। तथा आत्मा आध्यात्मिक चेतना एवं नैतिक मूल्य का प्रतिनिधित्व करती है।

उपाध्याय जी ने कहा है कि किसी भी आयाम की उपेक्षा विक्रत विकास की ओर ले जाती है, और सच्ची प्रगति के लिए संतुलित दृष्टिकोण का आग्रह किया एकात्म व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र की परस्पर निर्भरता पर भी प्रकाश डालता है। जो पूंजीवाद में निहित अत्यधिक व्यक्तिवाद और समाजवाद के सामूहिकतावाद का विरोध करता है, यह सिद्धांत बताता है कि व्यक्ति अपनी पहचान और जीवन का उद्देश्य अपने सामाजिक परिवेश से प्राप्त करता है, तथा इसके विपरीत समाज व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करता है। राष्ट्र को एक जीवित सांस्कृतिक इकाई के रूप में चिन्हित किया गया जो नैतिक संस्कृतिक ढाचे के अनुरूप सामाजिक कल्याण की बात करता है, यह दर्शन व्यक्तियों, समाज और राष्ट्र के बीच संबंधों को रेखांकित करता है, जो एकात्म को भारत में स्थाई राष्ट्र निर्माण के लिए प्रासंगिक दृष्टिकोण के रूप में स्थापित करता है।

एकात्म मानव दर्शन का उद्देश्य

एकात्म मानव दर्शन का उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जहां मानव का पूर्ण विकास सामाजिक समानता और नैतिक जीवन संभव हो।

1. मानव का समग्र विकासः एकात्म मानववाद का पहला उद्देश्य मनुष्य के चार आयाम का विकास करना है जहां शरीर भौतिक आवश्यकता मन भावनात्मक संतुलन बुद्धि ज्ञान व विवेक आत्मा (आध्यातमिक उन्नति) का विकास करना है।
2. समझ में समक्षरता स्थापित करनाः जाति, वर्ग, धर्म आदि के भेदभाव को खत्म करके समाज में एकता और भाईचारा बढ़ाना।
3. अंत्योदयः (अंतिम व्यक्ति का विकास) समाज के सबसे कमजोर और पिछड़े व्यक्ति का उत्थान करना ताकि विकास का लाभ सभी तक पहुंच सके।
4. विकेंद्रीकरणः जहां शक्ति और संसाधनों का केंद्रीकरण ना होकर गांव और स्थानीय स्तर तक वितरण हो।
5. भारतीय संस्कृति और मूल्यों का संरक्षणः पश्चिमी आधुनिकरण से बचकर भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक को बनाएं रखना।

विदेशी विचार सार्वलौकिक नहीं है– उपाध्याय जी का स्पष्ट मत है कि पाश्चात्य जीवन दर्शन सार्वलौकिक नहीं है, मानववाद जहाँ यूरोपीय पुनर्जागरण की संस्कृति है। वही जडवाद उसकी विकृति है पूंजीवाद माननीय साहस की विकृति है। साम्राज्यवाद और राष्ट्रवाद की विकृति है। फासीवाद तथा नजीवाद जिसके कारण विनाशकारी विश्व युद्धो का जन्म हुआ। दीनदयाल जी पाश्चात्य जीवन की वैज्ञानिक उपलब्धियो तथा उनके ज्ञान संवर्धन के प्रयत्नों के विरोधी नहीं है,

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.039

लेकिन उनकी विकृति के सम्बन्ध में ज्यादा चौकस है उनको लगता है कि पाश्चात्य जाते समाज की भौतिक प्रगति के आकर्षण में उसकी विकृतियों को नजर अंदाज कर रहे हैं । भारत जो पश्चिम की नकल करने का प्रयास कर रहा है, उसके समाज में एक संग्राम एवं दिशाहीनता उत्पन्न हो रही है। उपाध्याय जी का मत है कि पश्चिम की अच्छी बातें तथा उनके विचारों में पारंपरिक तालमेल का भाव है। राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र, समाजवाद, समते समाजवाद सभी के मूल्य संस्था का ही भाव है। समता समानता से भिन्न है।

आज पश्चिम के सामने यह प्रश्न खड़ा है कि इन की इन सभी अच्छी बातों का तालमेल कैसे बढ़ाया जाए, इसलिए दीनदयाल जी पश्चिम के आधुनिकरण के विरोधी है, लेकिन यह सभी मानवीय प्रश्नों को आदर देना चाहते हैं। उपाध्याय जी पश्चिम को मानवीय सभ्यता के मुख्य धारा मानकर उसमें डूबने को तैयार नहीं है। अपने राष्ट्रीय स्रोतों के साथ मानव सभ्यता की धारा को समृद्ध करने के मानसिकता से उपाध्याय जी ने भारतीय संस्कृति को अपनी चिंतन का आधार बना उसी आधार पर उनका एकात्म मानववदा विकसित हुआ।

भारतीय सांस्कृतिक अवधारणाः एकात्म मानववाद का उद्गम दीनदयाल जी भारतीय संस्कृति के प्रति एक राष्ट्रवादी के नेता स्वाभिमान का भाव रखते हैं तथा तात्विक दृष्टि से उसकी तर्कसंगत निरंतरता के समर्थक हैं, वह भारतीय संस्कृति के तेजस्वी अग्रदूत हैं, उनके एकात्मक मानववाद का विचार भारतीय संस्कृति की गहरी सुदृढ़ नीव पर ही खड़ा है।

भारतीय संस्कृति की पहली विशेषता है कि वह संपूर्ण जीवन का संपूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है। उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है। टुकड़े टुकड़ों में विचार करना विशषज्ञ की दृष्टि से ठीक हो सकता है, परंतु व्यावहारिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं।

भारतीय जीवन अध्यात्म प्रधान है लेकिन भौतिक उत्कर्ष की अपेक्षा नहीं करता हमारा विचार केंद्र है पूर्णता एकंगिकाता नहीं। भारतीय संस्कृति व्यक्ति समष्टि व परमेष्ठ को स्वतंत्र सप्ताओ के बावजूद अभिव्यक्त मानती है।

धर्म भारतीय संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। धर्म के कारण भारत में राजा, प्रजा, समाज व्यक्ति सभी सुसियमित हुए कोई भी उद्गल नहीं हो सकता । धर्म प्रकृति के शाश्वत तथा मलिकयों द्वारा खोजे हुए नियम है।

आधुनिक भारत में एकात्म मानववाद की वर्तमान में प्रासंगिकता

एकात्म मानववाद ऐसी विचारधारा है, जो एक चक्र के माध्यम से प्रस्तुत की जा सकती है। जिसकी धुरी में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा एक परिवार. परिवार से जुड़ा हुआ एक समाज फिर, राष्ट्र, विश्व और फिर अनंत ब्रह्मांड को अपने में सम्मिलित हुए हैं।

एकात्म मानववाद का प्राथमिक उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति समाज की आवश्यकताओं को संतुलित करते हुए, प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है, सतत विकास के साथ विकास को आगे बढ़ाना है। जिसमें भाभी वीडियो को भी संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने में सुलभता हो सके।

आज पूरे विश्व भर में जलवायु आपदाएं बढ़ती जा रही है। जिससे साधारण विकास में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। वैश्विक स्तर पर बड़ी संख्या में लोगों को गरीबों का सामना

करना पड़ रहा है, पर कई नए मॉडल इन समस्याओं से निपटने के लिए लाये गए किंतु वे सभी असफल होते दिख रहे हैं।

सामान्यतः भारत के राजनीतिक क्षेत्र में स्थापित सभी दल सोचते हैं कि हमें कुछ संसाधनों के साथ हैं, पाश्चात्य वादों को ही स्वीकारना पड़ेगा क्योंकि हमारे पास कोई अन्य चिंतन नहीं है। हम तो राष्ट्र थे ही नहीं पाश्चतयो ने ही आकर हमको राष्ट्र बनाने के लिए तैयार किया उनका विचार है कि हम राष्ट्र बनने जा रहे हैं। यह हम नवोदित राष्ट्र है आदि।

भारतीय जनसंघ भारतीय जनता पार्टी भारत को प्राचीन एंव सनातन राष्ट्र मानती है। पष्चिम के राष्ट्र राज्य परिकल्पना से पुरानी कल्पना भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की है। भारतीय संस्कृति एक गौरव संपन्न ज्ञान परंपरा है। हमें इसी ज्ञान परंपरा में भारत का भविष्य खोजना चाहिए। मानव की तरफ देखने की पाश्चातय दृष्टि खंडित है। उनका व्यक्तिवदा समाजवाद का दुश्मन है तथा समाजवाद व्यक्तिवाद का शत्रु है। वे प्रकृति पर मानव की विजय चाहते हैं, इस प्रकार यहां भी यहां भी प्रकृति बनाम मानव उनका समीकरण है।

सृष्टि के पांच महाभूत(पृथ्वी, जल, आकाश अग्नि व वायु) है। जिसके साथ न्याय संगत व्यवहार होना चाहिए, तथा अदृश्य किंतु अनुभूति में आने वाली आध्यात्मिक तत्वों से भी योग्य साक्षात्कार होना चाहिए। तभी मानव सुखी होगा।

व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि तथा पर्मिष्टि से एकात्म हुआ मानव ही विराट पुरुष है, इसके पुरुषार्थ चातुर्यामी है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये पुरुषार्थ मानव की परिस्थिति निरपेक्ष आवश्यकता है, इनकी सम्पूर्ति करना समाज व्यवस्था का काम है।

आज दुनिया को एक ऐसे मॉडल की तलाश है जो अपने प्रकृति में एकाग्रता है। आज भारत जैसे देश में बढ़ती थी। जनसंख्या के चलते गरीबी बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। जिसमें अल्पकालिक उपायो के अलावा कोई उपाय नहीं है। देश में आर्थिक असमानता की खाई बढ़ती जा रही है। जिससे गरीब अमीर के जीवन स्तर में बड़े अंतर के साथ उनमें असमानता और भेदभाव भी बढ़ते जा रहे हैं, इन सभी के चलते गरीब लोग अपने आजीविका जीवन स्तर को हीन महसूस करते हैं, तो राज्य में भगवान ईश्वर के दिए हुए वरदान के रूप में मानकर अपनी आत्मा को त्रप्त करते हैं।

स्वतंत्र भारत के बाद समाज वैज्ञानिकों ने भारत देश की गहराई समझने के लिए एकात्म मानववाद जैसा समग्र दृष्टिकोण चाहिए, जिसमें व्यक्ति से लेकर राष्ट तक इसकी प्रतिक्रिया नजर आती हो क्योंकि जब तक मनुष्य का समग्रता एंव सम्पूर्णता से चिंतन नहीं किया जाएगा तब तक उसकी समस्याओं का समाधान नहीं हो पाएगा, इन सभी मुद्दों के साथ राज्य के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पहलुऔ को एकीकृत ढांचे में पिरोकर ही देश की उन्नति की राह पर आगे बढ़ाया जा सकता है, क्योंकि यह सिद्धांत विविधता को प्रोत्साहन देता है। सभी वर्गों के लिए समानता के साथ अपने पक्षो को मजबूत करने का पूरा मौका देता है। क्योंकि भारत जैसे देष के लिए अधिक उपयोगी है, क्योंकि जिस देश में अनेकों बोलियां भाषण तथा सांस्कृतिक विविधता तथा आर्थिक विविधता भी यहां है।

जिससे सभी लोगों को सद्भाव महसूस हो सके, जिसके अंतर्गत विकास के केंद्र में मानव हो जिसमें उसका पूरा कल्याण हो सके।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिया गया यह सिद्धांत पूंजीवाद एवं समाजवाद के मध्य एक ऐसी राह के पक्षधर हैं। जिसमें दोनों प्रणालियों के गुण मौजूद है, लेकिन उनके आंत्रिक एव अलगाव जैसे अवगुण ना हो। यही उपाध्याय जी के चिंतन का भी आधार था, इसलिए वे गांधी जी के सर्वोदय से आगे अंत्योदय की बात कर पाए उनका दर्शन काल्पनिक व मानवीय नहीं यर्थापक एवं व्यवहारिक है।

निष्कर्ष

भारत जैसे देश के लिए लोक कल्याणकारी राज्य की धारणा को फलीभूत करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना है। एवं अंत्योदय अर्थात समाज के निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार करना है। यह दर्शन न केवल भारतीय बल्कि अन्य विकासशील देशों में भी सदैव उपयोगी साबित होगा। एकात्म मानववाद केवल एक राजनीतिक या आर्थिक सिद्धांत नहीं बल्कि भारत के सर्वांगीण और सन्तुलित विकास का एक मानवीय दर्शन है, जो आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्धांत हो सकता है।

सन्दर्भ

1. एकात्ममानववाद, यादव, ए. एंव अवस्थी, एम ओ (2018) इंटीग्रल ह्यूमैनिज्मः इंटीग्रेटेड टूरिस्ट विथ मैनेजमेंट डेवलपमेंट, श्री दीनदयाल उपाध्याय के एकात्मक मानव दर्शन के विभिन्न आयाम पृ0सं0–**242 से 249**।
2. डॉ प्रयाग नारायण त्रिपाठी (राष्ट्रीय धर्म प्रकाशन संस्कृति भवन) राजेंद्र नगर लखनऊ।
3. दुबे, डॉ अजय कुमार 2014 पंडित दीनदयाल उपाध्याय के मानवतावादी दर्शन की वर्तमान में प्रासांगिकता सौध पत्रिका वर्ष चार अंक कर 23 जून 2009।
4. नवीन शोध संस्थान रिसर्च जनरल एकात्म मानववाद की वर्तमान प्रासंगिकता (ओम प्रकाश योगी)।
5. भारतीय जन संघ 1965 भाषण www-इरच.ऑर्गेनाइजेशन यू panchajana-com